International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-12-2021, Accepted: 04-01-2022, Published: 20-01-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 34-35

रीवा जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षिकाओं का विद्यालय के प्रति समर्पण का अध्ययन

उमेश कुमार सिंह[1], सुरेन्द्र कुमार त्रिपाठी[2]
[1] अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, शा० शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
समस्या समाधान हेतु शोधार्थी द्वारा आकडों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है, अध्ययन के अन्तर्गत शोधार्थी विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं का शिक्षा के प्रति समर्पण का अध्ययन करने हेतु शिक्षा अधिकारियों एवं संस्था प्रमुखों, शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया हैा कुल 110 न्यादर्शों को अध्ययन में शामिल किया गया है। आकडों का विश्लेषण काई–वर्ग परीक्षण से कियागया है। निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि अविवाहित महिलाओं की अपेक्षा विवाहित महिलायें शिक्षा, विद्यालय एवं विद्यार्थियों के प्रति कम समर्पित होती है।

मूल शब्दः माध्यमिक स्तर, शिक्षिकाओं, समर्पण, अध्ययन

प्रस्तावना
शिक्षिकायें अविवाहित, विवाहित अथवा विधवा कोई भी हो सकती हैं किन्तु सभी में उच्च चरित्र आवश्यक है, इसके अभाव में किसी भी महिला को शिक्षक होने का अधिकार नही है केवल धनोपार्जन के लिये शिक्षण कार्य ग्रहण करना उपयुक्त नहीं है। वर्तमान में महिलायें आगे आकर विभिन्न पदों पर विराजमान हैं, यही कारण है कि सभी क्षेत्रों में उनकी मॉग में निरन्तर वृद्धि हो रही है।
शिक्षिकाओं के रूप में कार्य करने वाली महिलायें उसी नगर या ग्राम में नौकरी चाहती हैं, जिसमे वे निवास करती हैं, इसका कारण यह भी है कि अन्य स्थानों में उनको सुरक्षा, आदि की सुविधायें प्राप्त होना कठिन होता है। दूसरा कारण यह भी होता है कि यदि वे अविवाहित हैं तो उनके अभिभावक उनको अन्य स्थानों में नौकरी करने की अनुमति नहीं देते हैं। इसी तरह शिक्षिका के रूप में कार्य करने वाली कुछ महिलायें विवाह के पश्चात पारिवारिक कारणों में उलझ जाने के कारण नौकरी छोड देती हैं।

शोध के उद्देश्य
शोधार्थी द्वारा शोध के निम्नालिखित उद्देश्य का चयन किया गया है–
1. विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं का विद्यालय एवं विद्यार्थियों के प्रति समर्पण का अध्ययन करना।

परिकल्पना
1. अविवाहित शिक्षिकायें, विवाहित शिक्षिकाओं की तुलना में शिक्षा के प्रति अधिक समर्पित होती हैं।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व
प्रस्तुत शोध के संबंध में शोधार्थी के अनुसार इस शोध की आवश्यकता इसलिये भी महसूस की गई कि शिक्षा के लिये शिक्षको से अधिक उपयुक्त होने के कारण क्या शिक्षिकाओं की अधिक मॉग हुई है। इस शोध का महत्व यह भी है कि शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को जागरूक करने का प्रयास किया जा सकेगा।
शोधार्थी द्वारा शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के संबंध मे विचार करते हुये शिक्षा स्तर के बदलाव एवं अपनी जिज्ञासा की पूर्ति हेतु शोध सम्पादन की आवश्यकता महसूस की गयी है।

परिसीमन
शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययनहेतु रीवा जिले के 9 विकाशखण्डों का चयन कियागया है।

न्यादर्श
अध्ययन में शिक्षक, संस्था प्रमुख एवं शिक्षा अधिकारियों को शामिल किया गया है, न्यादर्शों की कुल संख्या 110 है–
कुल शिक्षक = 27
कुल शिक्षिकायें (विवाहित+अविवाहित) = 27
संस्था प्रमुख = 45
शिक्षा अधिकारी = 11
कुल = 110

उपकरण
शोधार्थी द्वारा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या
उपर्युक्त सारणी द्वारा यह स्पष्ट है कि स्वतंत्रता की कोटि उक्त आकड़ों के लिए 2 है। काई–वर्ग परीक्षण में स्वतंत्रता की कोटि 2 के लिए 0.05 विश्वास स्तर पर काई–वर्ग का मान 5.99 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर काई–वर्ग का मान 9.21 है। उक्त सारणी में गणना से प्राप्त काई वर्ग का मान 14.56 है जो उक्त दोनो विश्वास स्तर के मानों से अधिक है। अतः सिद्ध होता है कि उक्त सारणी के कथन के पक्ष तथा विपक्ष में सार्थक अंतर है अर्थात यहॉ पर किसी शून्य परिकल्पना का कोई अस्तित्व नही है। सारणी के कथन के पक्ष में 75 तथा विपक्ष में 35 मत है। इससे स्पष्ट होता है कि कथन–''अविवाहित शिक्षिकाएँ विवाहित शिक्षिकाओं की तुलना में शिक्षा के प्रति अधिक समर्पित होती है।'' का अस्तित्व है और कथन सत्य प्रभाणित होता है। गणना से स्पष्ट है कि अविवाहित महिलाएँ विवाहित महिलाओं की अपेक्षा विद्यालय में शिक्षा के प्रति अधिक समर्पित होती है। अतः शोधार्थी की परिकल्पना क्रमांक–10 ''अविवाहित शिक्षिकाएँ विवाहित शिक्षिकाओं की तुलना में शिक्षा के प्रति अधिक समर्पित होती है।'' स्वीकृति होती है। इस प्रकार शोधार्थी द्वारा इस अध्याय में अपने आकड़ों के संकलन से प्राप्त आंकड़ो को व्यवस्थापित किया गया

है। व्यवस्थापना के उपरांत आंकड़ों को उपकरणवार, आवश्यकतानुसार विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण में यह ध्यान रखा गया है कि शोधार्थी की परिकल्पना से संबंधित आवश्यक सभी गणना हो जाय। शोधार्थी द्वारा अध्ययन एवं गणना से सभी परिकल्पनाओं को पूरे ईमानदारी से परखने का प्रयास किया गया है कुछ परिकल्पनाऐं स्वीकृत तथा कुछ अस्वीकृत हुई हैं। शोधार्थी द्वारा आकड़ों में कोई हेर–फेर नही किया गया है बल्कि वास्तविक परिणाम लाने की दिशा में प्रयास किया गया है। शोधार्थी द्वारा अगले अध्याय में गणना से प्राप्त परिणामों, निष्कर्षों एवं सुझावों को अंकित किया गया है।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि गृहस्थी एवं पारिवारिक कार्यों में अधिक संलिप्तता के कारण शिक्षिकायें, शिक्षकों की तुलना में विद्यार्थियों के प्रति कम समर्पित होती है, इस कथन के पक्ष में 110 मे से 71 मत प्राप्त हुये हैं। न्यादर्श के रूप में शिक्षक, शिक्षिकायें, विद्यालयों के संस्था प्रमुख एवं शिक्षा अधिकारी शामिल हैं। समर्पण से सम्बंन्धित ही शोधार्थी द्वारा यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया गया है कि अविवाहित महिलायें (शिक्षिकायें) विवाहित महिलाओं (शिक्षिकाओं) की तुलना में विद्यालय व विद्यार्थियों के प्रति अधिक समर्पित होती हैं। विवाहित महिलाओं (शिक्षिकाओं) द्वारा पढाये गये विद्यार्थियों की विषयवस्तु आधारित शैक्षिक उपलब्धि तथा विज्ञान विषय की सामान्य जागरूकता की उपलब्धि अविवाहित महिलाओं (शिक्षिकाओं) की तुलना में निराशाजनक पाई गई है।

सुझाव

1. विवाहित महिला शिक्षिकाओं को अपने घर में अध्ययन के समय (घंटो) को बढाना उचित होगा।
2. महिला शिक्षिकाओं को अपने परिजनों से घरेलू कार्यों में सहयोग प्राप्त करना उचित होगा।

सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल एस. सी. व विशाल (2009), शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व कार्य के प्रति समर्पण के सन्दर्भ में अध्ययन, एज्यूट्रेकस, नील कमल पब्लिकेशन अप्रैल 2009, वाल्यूम 08, नं 6 पृ०सं०–32–35
2. शर्मा, आर०ए० (2011), ''शिक्षा अनुसन्धान'' विनय रखेजा आर०लाल बुक डिपो मेरठ ISO–9000–2008
3. कपिल एच०के० (2012) ''अनुसन्धान विधियॉ'', राखी प्रकाशन आगरा ISBN–978–93–80346–70–0